17 मार्च 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 24 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल स्मारक भवन के त्रिदिवसीय महोत्सव में -

डॉ. भारिल्ल ने बताया प्रवचनसार का संपूर्ण मर्म

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 26 से 28 फरवरी 2017 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का पंचम वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव के उद्घाटन के समाचार पूर्व के अंक (मार्च-प्रथम) में प्रकाशित हो चुके हैं।

महोत्सव में **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा प्रवचनसार पर प्रतिदिन दोनों समय मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला, जिसमें संपूर्ण प्रवचनसार परमागम का मर्म बताया गया। महोत्सव में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त विधान एवं प्रवचनों के माध्यम से पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने भी प्रवचनसार का सार बताया।

इस अवसर पर महोत्सव के विशेष आकर्षण के रूप में प्रतिदिन प्रात: डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित प्रवचनसार महामंडल विधान का प्रथम बार आयोजन किया गया। प्रवचनसार विधान के संपूर्ण कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा संपन्न कराये गये।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 26 फरवरी को महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 'टोडरमल से टोडरमल स्मारक तक' नामक नाट्य प्रस्तुति की गई, जिसे देखकर सभी साधर्मीजनों के मन में पण्डित टोडरमलजी की महिमा आयी। दिनांक 27 फरवरी को श्रीमती ज्योति टोंग्या जयपुर द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें उपस्थित साधर्मीजन भावविभोर हो उठे।

दिनांक 28 फरवरी को सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत केपिटल' इन्दौर द्वारा भगवान महावीर का, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा भगवान आदिनाथ, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर द्वारा श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री महेन्द्रकुमार राहुलजी गंगवाल जयपुर द्वारा श्री बाहुबली भगवान एवं श्री महेन्द्रकुमार-संजीवकुमार गोधा जयपुर द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान का सर्वप्रथम

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

राजस्थान जैन सभा एवं महावीरजी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का -

सम्मान समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में पंचम वार्षिक महोत्सव के अवसर पर दिनांक 26 फरवरी को रात्रि में राजस्थान जैन सभा एवं श्री महावीरजी की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी का सम्मान समारोह संपन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर एवं श्री राजेन्द्र के. गोधा जयपुर उपस्थित थे।

इस अवसर पर राजस्थान जैन सभा के श्री मुकेश सौगानी (उपाध्यक्ष), श्री राजेन्द्र जैन लुहाड़िया (कोषाध्यक्ष), श्री अमरचन्द जैन दीवान खोराबीसल (संयुक्त मंत्री) आदि महानुभावों को श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने शॉल ओढाकर एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने प्रशस्ति-पत्र भेंटकर सम्मानित किया।

श्री महावीरजी कमेटी के पदाधिकारियों के अन्तर्गत श्री सुधांशु कासलीवाल (अध्यक्ष), श्री नरेन्द्र पाटनी (उपाध्यक्ष), श्री महेन्द्रकुमार पाटनी (मंत्री), श्री उमरावमल संघी (संयुक्त मंत्री), आदि महानुभावों को श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने शॉल ओढाकर एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने प्रशस्ति-पत्र भेंटकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर विद्वत्वर्ग के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवजी

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के -

नवनिर्मित कार्यालय एवं कक्षा कक्षों का उद्घाटन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में पंचतीर्थ जिनालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के नवनिर्मित कार्यालय एवं विभिन्न कक्षा कक्षों का उद्घाटन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 27 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द कक्षा कक्ष का उद्घाटन श्री महेन्द्रकुमार राहुलजी गंगवाल जयपुर ने एवं आचार्य अमृतचन्द्र कक्षा कक्ष का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी तन्मय-ध्याता बजाज कोटा ने किया। दिनांक 28 फरवरी को नवनिर्मित कार्यालय का उद्घाटन श्री अशोकजी जैन 'अरिहंत कैपिटल', इन्दौर द्वारा किया गया।

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

किसी को सिर का शूल तो किसी को कानों का कष्ट, किसी को दमा से बेचैनी तो किसी को पेट की भयंकर पीड़ा, किसी को दिन-रात खांसी से चैन नहीं तो कोई हृदय की घबड़ाहट से बेचैन। जहाँ देखो वहीं दर्द ही दर्द। यदि कोई बेदर्द थे तो केवल डॉक्टर, नर्सें और कम्पाउंडर, जिन्हें न किसी के दर्द की परवाह और न किसी के चिल्लाने की चिन्ता। वे भी बेचारे क्या करें ? कराहें सुनते-सुनते उनके भी कान बठर हो गये थे। बड़ी से बड़ी चीख अब उन्हें प्रभावित नहीं करती थी।

वे दर्द दबाने की भी आखिर कितनी दवाएँ दें ? दवाओं की भी तो अपनी सीमाएँ होती हैं ? अत: दवाओं से तो केवल असहनीय दर्द को ही दबाया जा सकता है। थोड़ा-बहुत दर्द तो मरीज को सहना ही पड़ता है।

उन्होंने जो यह मान रखा था कि 'मरीजों की तो आदत ही चीखने-चिल्लाने की होती है'। कुछ अंश तक तो उनकी इस सोच को सच कहा भी जा सकता है; पर इससे बेचारे वे मरीज तो बेमौत मारे ही जाते हैं, जिनको वस्तुत: असह्य दर्द होता है। परन्तु यह पहचान भी कोई कैसे करे कि किसको कितना कष्ट है? कष्ट मापने का थर्मामीटर तो किसी के पास है नहीं।

बस, इन्हीं सब बातों से घबड़ाकर अज्जू ने अन्नू से परामर्श करके यह निश्चय किया कि अस्पताल से छुट्टी पाने के लिये विज्ञान से निवेदन किया जाये। वे इस संबंध में भी हमारी सहायता कर सकते हैं।

एक दिन डरते-डरते अज्जू ने विज्ञान से बड़े ही विनम्र शब्दों में कहा -''हम आपका जितना भी उपकार माने थोड़ा है। आप हम जैसे तुच्छ लोगों के साथ भी कितना कष्ट उठा रहे हैं और कितना रुपया हम लोगों पर खर्च कर रहे हैं। हम अनेक जन्मों में भी आपके इस ऋण से उऋण नहीं हो पायेंगे। यदि हम प्रथम परिचय में ही आपकी सलाह मान लेते और संजू की बातों में नहीं आते तो हमें ये दुर्दिन देखने ही नहीं पड़ते। 'पर होनहार बलवान होती है।' उसी के अनुसार सब कारण कलाप मिलते हैं। इसीकारण आपकी बात उस समय हमारी समझ में नहीं आयी।

जाति से जैन होकर भी हमने कोई भी काम जैनधर्म के अनुकूल नहीं किया। हम कितने पापी हैं; पर हम करते भी क्या ? दुर्भाग्य से हमें जन्म से ऐसा वातावरण ही नहीं मिला, जिससे हमें धर्म-कर्म से परिचय प्राप्त करने का सौभाग्य मिलता, हम तो ऐसे वातावरण में रहे कि जहाँ हमें केवल भौतिक वातावरण ही मिला। अब आपकी सद्प्रेरणा से हमें कुछ धर्म को सुनने, समझने एवं तदनुसार उसे आचरण में लाने की रुचि हुई है।

अत: हम धर्म के विषय में कुछ विशेष जानना चाहते हैं और जितना हमसे बनेगा, हम आचरण भी करना चाहते हैं। अत: हमें आप यहाँ से घर ले चलो। अब हमारा यहाँ जी नहीं लगता और यहाँ रहने की अब जरूरत भी नहीं है; क्योंकि केवल तीनों समय दवा की गोलियाँ ही तो चलती हैं, यहाँ का कोई ऐसा इलाज नहीं है, जो घर न हो सकता हो। आपको भी बार-बार आने-जाने की परेशानी होती है। घर पर आप लोगों से धर्म की दो बातें सीख लेंगे तो जन्म-जन्मान्तर में काम आयेंगी।

विज्ञान अज्जू और अन्नू के विचारों को सुनकर मन ही मन प्रसन्न हुआ; क्योंकि डॉक्टर धर्मचन्द की भी यही सलाह थी और विज्ञान स्वयं भी यही चाहता था। फिर भी विज्ञान ने उनके मन में हुए परिवर्तन की प्रतिक्रिया जानने के लिए कहा -''तुम्हें शेष रही-सही बुरी आदतों को भी जीवनभर के लिए छोड़ना होगा। तभी इस विषय पर विचार हो सकता है।''

दोनों ने उत्साह से कहा ''हम आपकी सब बातें मानेंगे और जैसा कहेंगे, वैसा ही करेंगे।''

उस दिन से उन्होंने जो यदा-कदा चोरी छिपे शराब, सिगरेट पीते थे, उसको भी सदा के लिए तिलांजलि दे दी।

परन्तु जब खेतों में खड़ी फसलें पानी की प्रतीक्षा करते-करते सूख चुकी हों तो बाद में मूसलाधार बरसात की भी क्या कीमत ? उससे उस फसल को क्या लाभ ? यही स्थिति अन्नू और अज्जू की हो चुकी थी। काश ! वे कुछ पहिले चेत जाते। पर चेत कैसे जाते, मौत का बुलावा जो आ गया था।

अज्जू के फेंफड़े सिगरेट के धुएँ से अत्यंत क्षीण हो चुके थे और अब कोई भी दवा काम नहीं कर रही थी। यही स्थिति अन्नू के लीवर की थी। यद्यपि अब कोई भी दवा काम नहीं कर सकती थी, पर 'जब तक श्वासा तब तक आशा' के अनुसार उपचार तो चल ही रहा था। (क्रमश:)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
श्री नेमिनाथ दिग.जैन नया मंदिर ट्रस्ट और अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, खनियांधाना द्वारा आयोजित

51वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2017 से 7 जून 2017 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग-विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458; Email - ptstjaipur@yahoo.com

(2) श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला-शिवपुरी 473990 (म.प्र.) मोबाइल - 09575305898 (सोमिल शास्त्री), 09644122018 (आकाश शास्त्री)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

अभिषेक किया गया।

श्री निर्मलजी संघी जयपुर द्वारा पद्मासन सीमंधर भगवान, श्री विक्रमजी शाह द्वारा युगमन्धर भगवान, श्री संजयजी कोठारी मुम्बई द्वारा बाहु भगवान एवं श्री प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत द्वारा सुबाहु भगवान का अभिषेक किया गया। चतुर्मुखी नेमिनाथ भगवान का अभिषेक श्री राजकुमारजी टोंग्या जयपुर एवं चतुर्मुखी वासुपूज्य भगवान का अभिषेक श्री महेन्द्रकुमार सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर ने किया।

इसप्रकार यह महोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। ●

श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अन्तिम वर्ष के छात्रों का -

विदाई समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 3 मार्च को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: पंचतीर्थ जिनालय पर जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित चार सत्रों के विदाई समारोह में अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ.संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, कु.प्रतीति जैन इत्यादि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया तथा महाविद्यालय में अपना स्वर्ण युग व्यतीत हुआ बताते हुये स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। साथ ही सभी विद्यार्थियों ने जीवनपर्यंत स्वाध्याय एवं तत्त्वप्रचार का संकल्प भी लिया। डॉ.भारिल्ल ने सभी को धर्मध्वज दिया एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने आजीवन तत्त्वप्रचार का संकल्प करवाया।

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि सभी ने हृदय से अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए तत्त्वज्ञानपूर्वक जीवन जीने की कला सिखाने के लिये महाविद्यालय एवं गुरुओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की है, यह हमारे अध्यापकों के गुरुत्व का ही कमाल है। उन्होंने महाविद्यालय के दो मुख्य उद्देश्य आत्मानुभूति एवं तत्त्वप्रचार पर विशेष बल देकर छात्रों को उद्बोधन दिया।

ब्र.यशपालजी ने कहा कि भविष्य में आप संस्था से जुड़कर कार्य करेंगे तो आपको अधिक सफलता मिलेगी।

श्री शुद्धात्मप्रकाशजी ने कहा कि योग्यता आपने यहाँ से हासिल की है, यह आपको सफल तो बनायेगी; लेकिन चरित्र आपको सफल बनाये रखना है, अत: चरित्र पर भी ध्यान देवें।

पण्डित शांतिकुमारजी ने कहा कि अभी तक आपने बहुत सी बातें सुनायी और सुनी। अब इन सुनी-सुनायी बातों पर अमल करेंगे तो लौकिक व लोकोत्तर दोनों जीवन निश्चित ही सुखमय होगा। डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने नियमित स्वाध्याय पर बल देते हुए कहा कि आप सभी ने आज अपने आत्मकल्याण एवं तत्त्वप्रचार करने के लिये जो भावनाएं व्यक्त की हैं, उन्हें सदैव याद रखना।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, श्रीफल और डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया। ज्ञातव्य है कि शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों ने अथक परिश्रमपूर्वक पूरे हॉल को राजस्थानी ग्रामीण परिवेश में सजाया था और स्वयं भी राजस्थानी वेशभूषा में थे। ●

स्वर्ण जयंती के मायने (21)
सूर्य अपरिहार्य है; फिर भी दीपक घर-घर में जलने चाहिये

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

वर्तमानकाल में 'भगवान आत्मा' की चर्चा प्रारम्भ करने का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वे हैं पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी। उन्होंने आत्मार्थ हेतु घरबार छोड़ा, समयसार पाकर पंथ का परित्याग किया और स्वांत:सुखाय स्वाध्याय में जुट गये।

पूज्य गुरुदेवश्री ने संसार के मर्म को मात्र समझा ही नहीं वरन प्रतिदिन दो प्रवचनों, एक समय तत्त्वचर्चा के माध्यम से जन-जन की वस्तु बना दिया।

वह युग, जब संचार माध्यमों का नितान्त अभाव था, देश के एक कोने में अकेले बैठकर मात्र अपने व्याख्यानों के माध्यम से ऐसी क्रांति के सूत्रपात का यह एक अनोखा और एकमात्र उदाहरण है जिसका दूसरा कोई सानी नहीं।

कहीं कोई कोलाहल नहीं, भागदौड़ और गहमागहमी नहीं और एक युगपुरुष, महानायक द्वारा महाक्रांति संपन्न हो गई।

पूज्य गुरुदेवश्री युगसूर्य थे, जिन्होंने स्वयं का कल्याण तो किया ही, युग को प्रकाशित किया, लोक को प्रकाशित किया। उन्होंने जो कुछ किया वह तो अपूर्व व अपरिहार्य है ही उसकी तो कोई तुलना है ही नहीं; पर यदि सूर्यास्त हो जाए तो ऐसा तो नहीं होना चाहिये न कि हम अंधेरे में बैठे रहें, न सही सूरज दीपक तो घर-घर में जलने चाहिये।

सूर्य द्वारा लोक का प्रकाशित होना सहज है; क्योंकि उसका स्वभाव ही प्रकाशक है, उसका स्वाभाविक तेज ही ऐसा है पर दीपक जलाना श्रमसाध्य है, दीपावलियाँ करना श्रम एवं व्ययसाध्य है, कुछ भी हो पर यह करना तो होगा ही, हमें स्वयं ही करना होगा, हम सभी को करना होगा, मिलकर करना होगा, अकेले करना होगा, अपने लिये करना होगा, औरों के लिये करना होगा। आज घर-घर में दीपक जलाने का काम हमने (पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने) सम्भाला है।

हम यह काम अकेले नहीं कर सकते हैं, हम आपको सामग्री उपलब्ध करवा सकते हैं, सहायता कर सकते हैं; पर अपने घर के चिराग तो आपको ही रोशन करने होंगे।

हमारे ये सभी कार्य, हमारी समस्त गतिविधियाँ नगर-नगर और घर-घर को रोशन करने के प्रयासों के अंग हैं। सत्साहित्य का प्रकाशन व वितरण, गाँव-गाँव व गली-गली में पाठशालाओं का संचालन, पाठशालाओं के शिक्षकों को प्रशिक्षण, वीतराग विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड का संचालन, प्रवचनकार विद्वान तैयार करने के उपक्रम, शिक्षण शिविरों का आयोजन, प्रवचनों की सी.डी. आपके घरों तक पहुंचाना और टीवी पर प्रवचनों के माध्यम से आपके घरों तक पहुंच जाना आदि।

उक्त सभी काम तो हम अकेले भी कर सकते हैं; पर अध्ययन व स्वाध्याय करना तो मात्र आपके ही हाथ में है, अपने लिये यह कार्य तो मात्र आप स्वयं ही कर सकते हैं। यदि आप यह करते हैं तो हमारा भी श्रम सार्थक होता है और आप आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढते हैं।

व्यस्तता की बात बेमानी है। यदि कोई कहे कि हमें समय ही नहीं मिलता है तो यह बात स्वीकार करने योग्य नहीं है। आखिर जगत में ऐसा कौनसा व्यस्ततम प्राणी है, जिसके पास अपने नित्यकर्म के लिये भी समय न हो ? वह राजा हो या रंक, कितना भी व्यस्त क्यों न हो, अपने नित्यकर्म के लिये व अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समय निकालता ही है, भोजन करता ही है, सोता भी है और मनोरंजन भी करता ही है। तब मात्र इसी कार्य के लिये समयाभाव का बहाना क्यों ? यह भी तो हमारे लिये अत्यंत आवश्यक नित्यकर्म है, यह भी हमारे अन्य नित्यकर्मों की भांति अपनी दिनचर्या में अपरिहार्य रूप से शामिल होना ही चाहिये। यदि अब तक हम ऐसा नहीं भी कर पाए हैं तो कोई बात नहीं, जब जागे तभी सवेरा; पर अब और देर नहीं। अब हमें तत्काल ही यह उपक्रम प्रारंभ करने होंगे; क्योंकि कौन जाने हमारे पास अब और कितना समय है।

तो आइये हम अभी अपने इस आत्मदीप को प्रकाशित करने में जुट जाएँ।

शिक्षण शिविर संपन्न

पोन्नूरमलै (तमिलनाडु) : यहाँ प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 21 से 26 फरवरी तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा रचित सार समयसार मंडल विधान एवं सार प्रवचन मंडल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन तीनों समय की व्याख्यानमाला के क्रम में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा उभयाभासी मिथ्यादृष्टि विषय पर एवं डॉ. सुदीपजी जैन द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन के विशिष्ट पहलुओं, उनके साहित्यिक अवदान और अन्य ऐतिहासिक तथ्यों की प्रामाणिक चर्चा प्रस्तुत की गई। आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् डॉ. राकेशजी शास्त्री द्वारा गुरुदेवश्री के प्रवचन पर विशेष चर्चा हुई। प्रात:कालीन व्याख्यानमाला में पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित जयकुमारजी कोटा, पण्डित प्रमोदजी सागर आदि के व्याख्यान हुये।

शिविर में लगभग 200 साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। संपूर्ण कार्यक्रम श्री अनन्तराय ए.शेठ के मार्गदर्शन और विरागजी शास्त्री के संयोजन में संपन्न हुये। **– राजीव जैन, प्रबंधक**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

गोधा, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर आदि उपस्थित थे।

सभी अतिथियों का स्वागत श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा तिलक लगाकर एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा अंगवस्त्र पहनाकर किया गया तथा कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया। ●

वेदी शिलान्यास संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ संस्कार तीर्थ शाश्वतधाम में निर्माणाधीन सीमंधर जिनालय के द्वितीय तल पर श्री नेमीनाथ भगवान की वेदी का एवं उत्तुंग शिखर का शिलान्यास दिनांक 26 फरवरी को संपन्न हुआ।

इस अवसर पर वेदी शिलान्यास श्री महेन्द्रजी गंगवाल परिवार जयपुर एवं शिखर शिलान्यास श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ द्वारा किया गया। विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित रजनीभाई दोशी द्वारा संपन्न हुये।

कार्यक्रम में दिनांक 2 से 7 दिसम्बर 2017 तक होने वाले शाश्वतधाम पंचकल्याणक के अध्यक्ष श्री अजितजी जैन द्वारा इस महोत्सव का आमंत्रण दिया गया। ●

तीर्थधाम आदीश्वरम् का वार्षिकोत्सव संपन्न

चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ तीर्थधाम आदीश्वरम् का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दिनांक 2 व 3 फरवरी को मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक 2 फरवरी को भक्तामर मण्डल विधान तथा 3 फरवरी को भगवान आदिनाथ की प्रतिमा का 108 कलशों से महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया गया। इसके पूर्व दिनांक 1 व 2 फरवरी को भजन संध्या का भी आयोजन हुआ।

विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. त्रिलोक भैया जबलपुर द्वारा संपन्न हुये। **– अखिल बंसल**

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 5 से 12 मार्च तक विभिन्न उपनगरों में विद्वानों द्वारा व्याख्यानों का लाभ मिला, जिनमें **सीमंधर जिनालय** में पण्डित रितेशजी जैन डडूका, **मलाड (ईस्ट)** में पण्डित मनीषजी जैन इन्दौर, **बोरीवली** में पण्डित अश्विनभाई शाह मलाड, **घाटकोपर** में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, **वसई** में पण्डित अनिलभाई शाह दहिसर, **मलाड (वेस्ट)** में पण्डित विपिनजी जैन, **दहीसर** में पण्डित ज्ञायकजी जैन वसई, **भायंदर** में पण्डित देवेन्द्रजी जैन मंगलायतन, **दादर** में पण्डित राजेश शेठ व पण्डित जिनेश शेठ द्वारा सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया।

(2) गढाकोटा (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा तीनों समय नाटक समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) भीलवाड़ा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर सीमंधर जिनालय में श्री प्रवचनसार मंडल विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त मंगलार्थी श्री सुलभ जैन झांसी, श्री शुद्धात्मप्रकाश चौधरी एवं श्री अनितेश जैन करेली द्वारा प्रवचन हुये। विधि–विधान के समस्त कार्य डॉ. अरविन्दकुमारजी जैन जयपुर द्वारा संपन्न हुये। कार्यक्रम का संयोजन श्री महावीरजी चौधरी एवं श्री नेमीचंदजी बघेरवाल ने किया। **– सुलभ जैन, मंगलार्थी**

युवा फैडरेशन की मीटिंग संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ ज्ञानोदय तीर्थ दीवानगंज में दिनांक 5 मार्च को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ की कोर कमेटी की मीटिंग व अधिवेशन पूजन, भक्ति व प्रवचन के साथ संपन्न हुआ, जिसमें श्री विजयजी बड़जात्या (अध्यक्ष–म.प्र.व छत्तीस. युवा फैडरेशन) ने अध्यक्षता की।

इस अवसर पर बंडा, आरोन, सागर, ग्वालियर, गुना, भोपाल आदि शाखाओं से सदस्य व पदाधिकारी उपस्थित हुए तथा सभी ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये। इसमें मुख्य रूप से ग्रुप की सक्रियता बनाये रखने एवं तत्त्वप्रचार के संबंध में सभी ने अपनी बात रखी। बंडा से श्री राहुलजी शास्त्री ने 31 गांवों में लगने वाले आगामी बुन्देलखण्ड ग्रुप शिविर की जानकारी दी। साथ ही भिण्ड के 101 स्थानों वाले ग्रुप शिविर की जानकारी श्री पुष्पेन्द्रजी भिण्ड द्वारा दी गई। नवनिर्मित शाखाओं का शपथ विधि समारोह विधिपूर्वक संपन्न हुआ। अन्त में पूर्व निर्धारित कुछ विषयों पर सभी ने चर्चा की तथा आगामी वर्ष की रूपरेखा तय की।

मंच संचालन पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री ग्वालियर ने एवं आभार प्रदर्शन श्री देवेन्द्रजी बड़कुल ने किया। **– रितेश जैन, इन्दौर**

आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा में –

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : आचार्य धरसेन दि.जैन सि.महाविद्यालय के 8वें सत्र का शुभारंभ 25 जून से हो रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी, विज्ञान एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है।

यहाँ छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते से पत्र या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। प्रवेश–प्रक्रिया 21 मई से 7 जून 2017 तक खनियांधाना में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी।

संपर्क – पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 9785643203; पण्डित रतनचंद चौधरी (निदेशक), मो. 9828063891, 8104597337; **फार्म मंगाने का पता –** बजाज पैलेस, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा (राज.)

हार्दिक बधाई

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सुपौत्र एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के सुपुत्र **चि. सर्वज्ञ भारिल्ल** का मंगल विवाह कोलकाता निवासी स्व. श्री बालचंदजी पाटनी की सुपौत्री एवं श्री सुरेशजी पाटनी की सुपुत्री **सौ.कां. चैरी** के साथ दिनांक 21 फरवरी को अत्यन्त उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर दोनों परिवारों की ओर से 51000–51000/– रुपये निकाले गये। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से नवदम्पत्ति को हार्दिक बधाई।

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :– पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में सातवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं।

सात तत्त्व संबंधी अन्यथा श्रद्धान –

प्रश्न : जीव–अजीव तत्त्व संबंधी अन्यथा श्रद्धान का निरूपण कीजिये।

उत्तर : जिन शास्त्रों से जीव के त्रस–स्थावरादिरूप तथा गुणस्थान–मार्गणादिरूप भेद को जानता है, अजीव के पुद्गलादि भेदों को तथा उनके वर्णादि विशेषों को जानता है; परन्तु अध्यात्मशास्त्रों में भेदविज्ञान को कारणभूत व वीतरागदशा होने को कारणभूत जैसा निरूपण किया है वैसा नहीं जानता।

तथा किसी प्रसंगवश उसीप्रकार जानना हो जाये तब शास्त्रानुसार जान तो लेता है; परन्तु अपने को आपरूप जानकर पर का अंश भी अपने में न मिलाना और अपना अंश भी पर में न मिलाना – ऐसा सच्चा श्रद्धान नहीं करता है।

तथा पर्याय में जीव–पुद्गल के परस्पर निमित्त से अनेक क्रियाएँ होती हैं, उन्हें दोनों द्रव्यों के मिलाप से उत्पन्न हुई जानता है; यह जीव की क्रिया है उसका पुद्गल निमित्त है, यह पुद्गल की क्रिया है उसका जीव निमित्त है – ऐसा भिन्न–भिन्न भाव भासित नहीं होता।

प्रश्न : आस्रव तत्त्व तत्त्व संबंधी अन्यथा श्रद्धान का निरूपण कीजिये।

उत्तर : आस्रव तत्त्व में जो हिंसादिरूप पापास्रव हैं, उन्हें हेय जानता है; अहिंसादिरूप पुण्यास्रव हैं, उन्हें उपादेय मानता है; परन्तु यह तो दोनों ही कर्मबन्ध के कारण हैं, इनमें उपादेयपना मानना वही मिथ्यादृष्टि है।

तथा मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, योग – ये आस्रव के भेद हैं, उन्हें बाह्यरूप तो मानता है; परन्तु अंतरंग इन भावों की जाति को नहीं पहिचानता।

वहाँ अन्य देवादि के सेवनरूप गृहीतमिथ्यात्व को मिथ्यात्व जानता है; परन्तु अनादि अगृहीतमिथ्यात्व है, उसे नहीं पहिचानता।

तथा बाह्य त्रस–स्थावर की हिंसा तथा इन्द्रिय–मन के विषयों में प्रवृत्ति को अविरति जानता है; हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है और विषयसेवन में अभिलाषा मूल है, उसका अवलोकन नहीं करता।

तथा बाह्य क्रोधादि करना उसको कषाय जानता है, अभिप्राय में राग–द्वेष बस रहे हैं, उनको नहीं पहिचानता।

तथा बाह्य चेष्टा हो उसे योग जानता है, शक्तिभूत योगों को नहीं जानता।

तथा राग–द्वेष–मोहरूप जो आस्रवभाव हैं, उनका तो नाश करने की चिन्ता नहीं और बाह्य क्रिया अथवा बाह्य निमित्त मिटाने का उपाय रखता है। इसलिये जो अंतरंग अभिप्राय में मिथ्यात्वादिरूप रागादिभाव हैं वे ही आस्रव हैं। उसे नहीं पहिचानता।

प्रश्न : बंध तत्त्व संबंधी अन्यथा श्रद्धान का निरूपण कीजिये।

उत्तर : बंधतत्त्व में जो अशुभभावों से नरकादिरूप पाप का बंध हो उसे तो बुरा जानता है और शुभभावों से देवादिरूप पुण्य का बन्ध हो उसे भला जानता है। अशुद्ध भावों से कर्मबन्ध होता है, उसमें भला–बुरा जानना वही मिथ्या श्रद्धान है।

प्रश्न : संवर तत्त्व संबंधी अन्यथा श्रद्धान का निरूपण कीजिये।

उत्तर : संवरतत्त्व में अहिंसादिरूप शुभास्रवभावों को संवर जानता है; परन्तु एक ही कारण से पुण्यबंध भी माने और संवर भी माने वह नहीं हो सकता।

शंका – मुनियों के एक काल में एक भाव होता है, वहाँ उनके बन्ध भी होता है और संवर–निर्जरा भी होते हैं, सो किसप्रकार है ?

समाधान – वह भाव मिश्ररूप है। कुछ वीतराग हुआ है, कुछ सराग रहा है। जो अंश वीतराग हुए उनसे संवर है और जो अंश सराग रहे उनसे बन्ध है। सो एक भाव से तो दो कार्य बनते हैं; परन्तु एक प्रशस्तराग ही से पुण्यास्रव भी मानना और संवर–निर्जरा भी मानना सो भ्रम है।

सिद्धांत में गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परीषहजय, चारित्र – इनके द्वारा संवर होता है ऐसा कहा है, सो इनकी भी यथार्थ श्रद्धा नहीं करता।

किस प्रकार ? सो कहते हैं –

गुप्ति : बाह्य मन–वचन–काय की चेष्टा मिटाये, पाप–चिंतवन न करे, मौन धारण करे, गमनादि न करे; उसे वह गुप्ति मानता है। सो यहाँ तो मन में भक्ति आदि रूप प्रशस्तराग से नानाविकल्प होते हैं, वचन–काय की चेष्टा स्वयं ने रोक रखी है, वहाँ शुभप्रवृत्ति है और प्रवृत्ति में गुप्तिपना बनता नहीं है, इसलिये वीतरागभाव होने पर जहाँ मन–वचन–काय की चेष्टा न हो वही सच्ची गुप्ति है।

समिति : तथा परजीवों की रक्षा के अर्थ यत्नाचार प्रवृत्ति उसको समिति मानता है। सो हिंसा के परिणामों से तो पाप होता है और रक्षा के परिणामों से संवर कहोगे तो पुण्यबन्ध का कारण कौन ठहरेगा ? तथा एषणासमिति में दोष टालता है वहाँ रक्षा का प्रयोजन है नहीं, इसलिये रक्षा ही के अर्थ समिति नहीं है।

तो समिति कैसी होती है ? मुनियों के किंचित् राग होने पर गमनादि क्रिया होती है, वहाँ उन क्रियाओं में अतिआसक्तता के अभाव से प्रमादरूप प्रवृत्ति नहीं होती। तथा अन्य जीवों को दु:खी करके अपना गमनादि प्रयोजन नहीं साधते, इसलिये स्वयमेव ही दया पलती है। इसप्रकार सच्ची समिति है।

धर्म : तथा बन्धादिक के भय से अथवा स्वर्ग–मोक्ष की इच्छा से क्रोधादि नहीं करते, परन्तु वहाँ क्रोधादि करने का अभिप्राय तो मिटा नहीं है। जैसे कोई राजादिक के भय से अथवा महंतपने के लोभ से परस्त्री का सेवन नहीं करता, तो उसे त्यागी नहीं कहते। वैसे ही यह क्रोधादिक का त्यागी

नहीं है। तो कैसे त्यागी होता है ? पदार्थ अनिष्ट–इष्ट भासित होने से क्रोधादिक होते हैं, जब तत्त्वज्ञान के अभ्यास से कोई इष्ट–अनिष्ट भासित न हो, तब स्वयमेव ही क्रोधादिक उत्पन्न नहीं होते, तब सच्चा धर्म होता है।

अनुप्रेक्षा : तथा अनित्यादि चिंतवन से शरीरादिक को बुरा जान, हितकारी न जानकर उनसे उदास होना, उसका नाम अनुप्रेक्षा कहता है। सो यह तो जैसे कोई मित्र था तब उससे राग था और पश्चात् उसके अवगुण देखकर उदासीन हुआ, उसी प्रकार शरीरादिक से राग था, पश्चात् अनित्यादि अवगुण अवलोककर उदासीन हुआ; परन्तु ऐसी उदासीनता तो द्वेषरूप है। अपना और शरीरादिक का जहाँ जैसा स्वभाव है वैसा पहिचानकर, भ्रम को मिटाकर, भला जानकर राग नहीं करना और बुरा जानकर द्वेष नहीं करना, ऐसी सच्ची उदासीनता के अर्थ यथार्थ अनित्यत्वादिक का चिंतवन करना ही सच्ची अनुप्रेक्षा है।

परीषहजय : तथा क्षुधादिक होने पर उनके नाश का उपाय नहीं करना; उसे परीषह सहना कहता है। सो उपाय तो नहीं किया और अंतरंग में क्षुधादि अनिष्ट सामग्री मिलने पर दु:खी हुआ, रति आदि का कारण मिलने पर सुखी हुआ, तो वे दु:ख–सुखरूप परिणाम हैं, वही आर्त्तध्यान–रौद्रध्यान हैं। ऐसे भावों से संवर कैसे हो ? इसलिये दु:ख का कारण मिलने पर दु:खी न हो और सुख का कारण मिलने पर सुखी न हो, ज्ञेयरूप से उनका जाननेवाला ही रहे, वही सच्चा परीषहसहन है।

चारित्र : तथा हिंसादि सावद्ययोग के त्याग को चारित्र मानता है, वहाँ महाव्रतादिरूप शुभयोग को उपादेयपने से ग्राह्य मानता है; परन्तु तत्त्वार्थसूत्र में आस्रव पदार्थ का निरूपण करते हुए महाव्रत–अणुव्रत को भी आस्रवरूप कहा है। वे उपादेय कैसे हों ? तथा आस्रव तो बन्ध का साधक है और चारित्र मोक्ष का साधक है, इसलिये महाव्रतादिरूप आस्रवभावों को चारित्रपना संभव नहीं होता, सकल कषायरहित जो उदासीनभाव उसी का नाम चारित्र है।

प्रश्न : निर्जरा तत्त्व संबंधी अन्यथा श्रद्धान का निरूपण कीजिये।

उत्तर : यह जीव अनशनादि तप से निर्जरा मानता है; परन्तु केवल बाह्य तप ही करने से तो निर्जरा होती नहीं है। बाह्य तप तो शुद्धोपयोग बढाने के अर्थ करते हैं। शुद्धोपयोग निर्जरा का कारण है। इसलिये बाह्य प्रवृत्ति के अनुसार निर्जरा नहीं है, अंतरंग कषायशक्ति घटने से विशुद्धता होने पर निर्जरा होती है।

प्रश्न : मोक्ष तत्त्व संबंधी अन्यथा श्रद्धान का निरूपण कीजिये।

उत्तर : अज्ञानी जीव सिद्ध होना उसे मोक्ष मानता है। वहाँ जन्म–मरण–रोग–क्लेशादि दु:ख दूर हुए, अनन्तज्ञान द्वारा लोकालोक का जानना हुआ, त्रिलोकपूज्यपना हुआ – इत्यादि रूप से उसकी महिमा जानता है। सो सर्व जीवों के दु:ख दूर करने की, ज्ञेय जानने की तथा पूज्य होने की इच्छा है। यदि इन्हीं के अर्थ मोक्ष की इच्छा की तो इसके अन्य जीवों के श्रद्धान से क्या विशेषता हुई ?

तथा इसके ऐसे भी अभिप्राय है कि स्वर्ग में सुख है उससे अनन्तगुणा सुख मोक्ष में है। सो इस गुणाकार में वह स्वर्ग–मोक्षसुख की एक जाति जानता है।

इन्द्रादिक के जो सुख है, वह कषायभावों से आकुलतारूप है, सो वह परमार्थ से दु:ख ही है; इसलिये उसकी और इसकी एक जाति नहीं है। स्वर्गसुख का कारण प्रशस्तराग है और मोक्षसुख का कारण वीतरागभाव है, इसलिये कारण में भी विशेष है; परन्तु ऐसा भाव इसे भासित नहीं होता।

प्रश्न : अज्ञानी व ज्ञानी की उदासीनता किस प्रकार की होती है ?

उत्तर : अज्ञानी की उदासीनता – स्त्री–पुत्रादि भोगसामग्री आदि दु:खरूप हैं और देव–शास्त्रादि/व्रत–तपादि हितकारी हैं, इसप्रकार परद्रव्यों में किसी को बुरा जान अनिष्ट रूप और किसी परद्रव्य को भला जान इष्ट रूप श्रद्धान करते हैं। परद्रव्य में इष्ट अनिष्ट श्रद्धान सो मिथ्या है। इसी श्रद्धान से अज्ञानी की उदासीनता भी द्वेष रूप होती है; क्योंकि किसी को बुरा जानना उसी का नाम द्वेष है।

ज्ञानी की उदासीनता – किसी भी द्रव्य का दोष या गुण भासित न हो, इसलिये किसी को भला–बुरा न जाने, स्व को स्व जाने, पर को पर जाने, पर से कुछ प्रयोजन मेरा नहीं है, ऐसा मानकर साक्षीभूत रहे, ऐसी उदासीनता ज्ञानी की होती है।

प्रश्न : प्रशस्त राग ज्ञानी/अज्ञानी दोनों को ही होने पर भी दोनों के श्रद्धान में क्या भिन्नता है ?

उत्तर : प्रशस्त राग के उपाय में और हर्ष में समानता होने पर भी सम्यग्दृष्टि के तो दण्ड समान और मिथ्यादृष्टि के व्यापार समान श्रद्धान पाया जाता है। इसलिये अभिप्राय में विशेष हुआ।

इसके परीषह–तपश्चरणादिक के निमित्त से दु:ख हो उसका इलाज तो नहीं करता; परन्तु दु:ख का वेदन करता है, सो दु:ख का वेदन करना कषाय ही है। जहाँ वीतरागता होती है वहाँ तो जैसे अन्य ज्ञेय को जानता है, उसी प्रकार दु:ख के कारण ज्ञेय को जानता है।

प्रश्न : उभयाभासी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप बताइये।

उत्तर : जो जीव ऐसा मानते हैं कि जिनमत में निश्चय–व्यवहार दोनों नय कहे हैं, इसलिये हमें उन दोनों का अंगीकार करना चाहिये – ऐसा विचारकर निश्चयाभास के अवलम्बियों जैसा तो निश्चय का अंगीकार करते हैं एवं व्यवहाराभास के अवलम्बियों जैसा व्यवहार का अंगीकार करते हैं।

यद्यपि इसप्रकार अंगीकार करने में दोनों नयों के परस्पर विरोध है, तथापि करें क्या ? दोनों नयों का सच्चा स्वरूप भासित हुआ नहीं और जिनमत में दो नय कहे हैं, उनमें से किसी को छोड़ा भी नहीं जाता; इसलिये भ्रमसहित दोनों का साधन साधते हैं, वे जीव उभयाभासी मिथ्यादृष्टि जानना।

प्रश्न : जिनमार्ग में दोनों नयों का ग्रहण करना कहा सो किस प्रकार?

उत्तर : जिनमार्ग में कहीं तो निश्चयनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है, उसे तो 'सत्यार्थ ऐसे ही है' – ऐसा जानना तथा कहीं व्यवहारनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है, उसे 'ऐसे है नहीं, निमित्तादि की अपेक्षा उपचार किया है' – ऐसा जानना। इसप्रकार जानने का नाम ही दोनों नयों का ग्रहण है।

प्रश्न : यदि व्यवहार नय असत्यार्थ है तो उसका उपदेश जिनमार्ग में किसलिये दिया ?

उत्तर : ऐसा ही तर्क समयसार में किया है, वहाँ यह उत्तर दिया है –

जह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणाउ गाहेउं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवएसणमसक्कं ।।8 ।।

अर्थ – जिस प्रकार अनार्य अर्थात् म्लेच्छ को म्लेच्छ भाषा बिना अर्थ ग्रहण कराने में कोई समर्थ नहीं है, उसी प्रकार व्यवहार के बिना परमार्थ का उपदेश अशक्य है; इसलिये व्यवहार का उपदेश है।

इसके अलावा जब तक निश्चय से प्ररूपित वस्तु को ना पहिचाने तब तक निचली दशा में अपने को भी व्यवहारनय कार्यकारी है।

प्रश्न : सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि का प्रमुख लक्षण क्या है ?

उत्तर : कोई मन्दकषायादि का कारण पाकर ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षयोपशम हुआ, जिससे तत्त्वविचार करने की शक्ति हुई तथा मोह मन्द हुआ, जिससे तत्त्वविचार में उद्यम हुआ और बाह्य निमित्त देव-गुरु-शास्त्रादिक का हुआ, उनसे सच्चे उपदेश का लाभ हुआ।

वहाँ अपने प्रयोजनभूत मोक्षमार्ग के, देव-गुरु-धर्मादिक के, जीवादि तत्त्वों के, निज-पर के और अपने को अहितकारी-हितकारी भावों के इत्यादिक उपदेश से सावधान होकर ऐसा विचार किया कि अहो ! मुझे तो इन बातों की खबर ही नहीं, मैं भ्रम से भूलकर प्राप्त पर्याय ही में तन्मय हुआ; परन्तु इस पर्याय की तो थोड़े ही काल की स्थिति है तथा यहाँ मुझे सर्व निमित्त मिले हैं, इसलिये मुझे इन बातों को बराबर समझना चाहिये; क्योंकि इनमें तो मेरा ही प्रयोजन भासित होता है। इसप्रकार सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि होता है।

प्रश्न : जिनेन्द्र भगवान अन्यथावादी नहीं होते तो जैसा उनका उपदेश है, वैसा ही अंगीकार कर लें, परीक्षा क्यों करना ?

उत्तर : परीक्षा किये बिना यह तो मानना हो सकता है कि जिनदेव ने ऐसा कहा है सो सत्य है; परन्तु उनका भाव अपने को भासित नहीं होगा। भाव भासित हुए बिना निर्मल श्रद्धान नहीं होता; क्योंकि जिसकी किसी के वचन ही से प्रतीति की जाये, उसकी अन्य के वचन से अन्यथा भी प्रतीति हो जाय; इसलिये शक्ति अपेक्षा वचन से की गई प्रतीति अप्रतीतिवत् है। तथा जिसका भाव भासित हुआ हो, उसे अनेक प्रकार से भी अन्यथा नहीं मानता, इसलिये भाव भासित होने पर जो प्रतीति होती है, वही सच्ची प्रतीति है।

प्रश्न : उपदेश तो अनेक प्रकार के हैं, किस-किस की परीक्षा करें ?

उत्तर : उपदेश में कोई उपादेय, कोई हेय तथा कोई ज्ञेयतत्त्वों का निरूपण किया जाता है। वहाँ उपादेय-हेय तत्त्वों की तो परीक्षा कर लेना; क्योंकि इनमें अन्यथापना होने से अपना बुरा होता है। उपादेय को हेय मान लें तो बुरा होगा, हेय को उपादेय मान लें तो बुरा होगा।

प्रश्न : लब्धि की परिभाषा लिखिये।

उत्तर : क्षयोपशम लब्धि – जिसके होने पर तत्त्वविचार हो सके – ऐसा ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षयोपशम क्षयोपशम लब्धि है।

विशुद्ध लब्धि – मोह का मन्द उदय आने से मन्दकषायरूप भाव हों कि जहाँ तत्त्वविचार हो सके सो विशुद्ध लब्धि है।

देशना लब्धि – जिनदेव के उपदिष्ट तत्त्व का धारण हो, विचार हो, सो देशना लब्धि है। जहाँ नरकादि में उपदेश का निमित्त न हो वहाँ वह पूर्व संस्कारों से होती है।

प्रायोग्य लब्धि – कर्मों की पूर्वसत्ता अंत:कोड़ाकोड़ी सागर प्रमाण रह जाये और नवीन बन्ध अंत:कोड़ाकोड़ी प्रमाण उसके संख्यातवें भागमात्र हो, वह भी उस लब्धिकाल से लगाकर क्रमश: घटता जाये और कितनी ही पाप प्रकृतियों का बन्ध क्रमश: मिटता जाये – इत्यादि योग्य अवस्था का होना सो प्रायोग्य लब्धि है।

करण लब्धि – जिसके पश्चात् सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नियम से हो, जीव के ऐसे परिणामों की प्राप्ति करण लब्धि है।

– संयोजक-पीयूष शास्त्री, जयपुर

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 9 अप्रैल	आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली	कन्या निकेतन का दीक्षान्त समारोह एवं उपकार दिवस
24 से 28 अप्रैल	देवलाली-नासिक	गुरुदेवश्री जयन्ती
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर
9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम-अहमदाबाद	गुरुमंथनवाणी शिविर
23 जुलाई से 1 अग.	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

नोट – विदेश कार्यक्रम (विस्तार से) आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com